REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 9 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2020

पर्यावरण और मानव कल्याण एक भौगोलिक अध्ययन

प्रा.डी.एस कांबले
भूगोल विभाग, जवाहर कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, अणदूर.
ता.तुलजापूर, जि. उस्मानाबाद. (महाराष्ट्र)

सारांश :-

पर्यावरण में जैव एवं अजैव घटक सभी मिलकर संतुलित बनाए रखते है सभी अपना-अपना कार्य करते है। इनमें मानव ही एक जीव है जो सबसे अधिक बुध्दिमान है। पर्यावरण का उपयोग अपनी इच्छानुसार करता है। पर्यावरण में मानव की स्थिती प्रमुख है। मानव अपनी विभिन्न कियाओं द्वारा पर्यावरण को प्रभावित करता है। मानव ने ऐतिहासिक विकास क्रम में प्राकृतिक साधनों पर नियंत्रण करने, उपयोग में लाने तथा उनका उपयोग करके अपने ज्ञान, कला कौशल्य आदि में उन्नति की है। इस मानवी क्रिया में अनेक लाभकारी तथा अनेक हानिकारक प्रभाव रहे है। वर्तमान मानव का पर्यावरण पूर्णत, परिवर्तित है। तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ निदेशक पक्ष का भी विकास हुआ है। जिससे मानव के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है

की वर्ड :- मानव, पर्यावरण, प्रकृति.

प्रस्तावना :-

पर्यावरण जीवन स्त्रोत है जो अनादिकाल से पृथ्वीपर मानव एवं संपूर्ण जीवन जगत को न केवल आश्रय देता रहा है। वरना उसे विकसित होने हेतू प्रारंभीक काल से लेकर वर्तमान काल तक आधार प्रधान कर रहा है। भविष्य भी पर्यावरण पर ही निर्भर है। विज्ञान की साहायता से मानव प्रकृति पर विजय पाने हेतू अपने प्रयासों में जितना सफल होता रहा है। प्रकृति ने पृथ्वी पर जीवन के लिये प्रत्येक जीव के सुविधा नुसार उपभोग संरचना का निर्माण किया है। परन्तू मानव ऐसा समझता है कि इस पृथ्वी पर जो भी पेड़-पौधे पशु-पक्षी, नदी, पर्वत, समुद्र आदि है, वे सब उसके उपभोक के लिए है और वह पृथ्वी का मनमाना शोषण कर सकता है। यद्यपि इस महत्वकांक्षा ने मनुष्य को एक और उन्नत और समृध्द बनाया है, तो दूसरी और कुछ दुष्परिणा भी प्रदान किये है। जो आज चिरकाल रुप धारण कर हमारे सामने खड़े है। पृथ्वी पर प्रकृति पोषण के लिए पर्यावरण की सुरक्षा विकास का एक अनिवार्य भाग है। पर्यावरण की समुचित सुरक्षा के अभाव में विकास की क्षति होती है। पर्यावरण प्रदूषण उसके द्वारा उतनाही बढता रहा है। आज हमारा भविष्य असुरक्षित होता जा रहा। यांत्रिकरण के फलस्वरुप कुछ

- कारखानों का विकास हुआ। उनसे निकने वाले उत्पादों से पर्यावरण का निरन्तर पतन हो रहा है। कारखानों से निकलने वाले धुएं से कार्बन मोनो ऑक्साइड और कार्बनडाय ऑक्साइड जैसी गैसो से ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ रहा है। ओझोन परत का क्षरण स्कीन समस्यायें वातानुकूलन यंत्रो आदि कारणों से मानव जीवन खतरे में है। पर मानव अपनी सोच एवं आदतों को बदल ने तैयार नहीं। वर्तमान में भारत की जनसंख्या एक अरब से ऊपर तथा विश्व की जनसंख्या छः अरब से अधिक पहुंच गई है। इस अधिक विस्तार के कारण वनों का क्षेत्रफल लगातार घट रहा है। दस साल में लगभग 24 करोड़ एकड वन क्षेत्र समाप्त हो गया है। सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे है। लेकिन वह निष्प्रभ रहते है । पर्यावरण सम्बन्धी अनेक मुद्दे आज विश्व की चिन्ता का विषय है। राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में प्रभावी रूपसे सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य :-

1) छात्रों विश्व के नागरिकों को पर्यावरण की रक्षा तथा महत्व की आवश्यकता के संबंध में जागृत करना।
2) इस इकाई के अध्ययन पश्चात आप पर्यावरण की अवधारणा को समझ सकेंगे एवं पर्यावरण को बचाने के प्रति जागरूक होंगे।
3) मानव गतिविधयोंसे पर्यावरण को क्या नुकसान हो रहा है उसे जान सकेंगे।
4) पर्यावरण परिवर्तन के कारण होनेवाले नुकसान को जान सकेंगे।
5) अपशिष्ट पदार्थ का प्रबंधन करना सीख सकेंगे।

शोध प्रविधि :-

प्रस्तुत शोध विषयपूर्ण रूप से द्वितीयक संमको पर आधारित है। जिसका संकलन मासिक, पत्रिकाओं, संदर्भ ग्रंथ, से किया गया है।

विषय विश्लेषण :-

पर्यावरण एक व्यापक शब्द है। इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण भौतिक परिवेष जलवायु पेड-पौधे, मिट्टी और प्रकृति के अन्य तत्व तथा जीव-जन्तु सम्मिलित है। जब पर्यावरण के सभी घटक पारस्पारिक तालमेल नहीं रखते तो परिस्थितिक असन्तुलन उत्पन्न हो जाता है । पर्यावरण के सभी तत्व प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूपरी मानव स्वास्थ्य और मानव कल्याण को प्रभावित करते हैं ।' पर्यावरण शब्द परि और आवरण से मिलकर बना है। जिसमें सम्पूर्ण जड़ और चेतन सम्मिलित है। पृथ्वी के चारो और प्रकृति तथा मानव निर्मित समस्त दृष्य-अदृष्य पदार्थ पर्यावरण के अंग है। हमारे चारो और का वातावरण और उसमें पाये जानेवाले प्राकृतिक, अप्राकृक्तिक जड़ चेतना सभी का मिला-जुला नाम पर्यावरण है। और उसमे पारसरिक ताल-मेल और अन्योन्य किया व पारस्पारिक प्रभाव को पर्यावरण संतुलन कहते है।

व्यापक अधों में पर्यावरण उन सम्पूर्ण शक्तियों परिस्थितियों एवं वस्तुओं का योग है, जिनसे मनुष्य विरा हुआ है तथा अपने किया कल्लापों से उन्हें प्रभावित करता है। आनुवंधिकता और पर्यावरण दो अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक है। जिनसे मानव सबसे अधिक प्रभावित होता है। मनुष्य ही सम्पूर्ण जीव जगत का केंद्रबिंदू है। और आनुवांधिकता उसकी अन्नतविहित क्षमताओं

को भू-सतह पर लाता है। इस प्रकार मानव तथा अन्य जीव पृथ्वी तथा उसके पर्यावरण के अविभाज्य अंग है। और पृथ्वी को अविभाज्य इकाई का स्वरुप प्रदान करता है।

पर्यावरण की परिभाषा :-

1) **पार्क** के अनुसार पर्यावरण का अर्थ उन दशाओं के योग से होता है जो मनुष्य को निश्चित समय में निश्चित स्थान पर प्रवृत करता है।
2) **हर्शको विट्स** पर्यावरण सम्पूर्ण बाह्य परिस्थितियों एवं प्रभावों को जीवधारियों पर पड़ने वाला सम्पूर्ण प्रभाव है जो जीवन विकास एवं कार्य को प्रभावित करता है।
3) टान्सले पर्यावरण को उन सम्पूर्ण प्रभावी दशाओं का योग है, जिसमें जीव रहते है।

अर्थात पर्यावरण विश्व का समग्र दृष्टीकोन है। तथा उसकी रचना स्थानिक तत्वों वाले एवं विभिन्न सामाजिक आर्थिक तंत्रो से होती है। ये विभिन्न तंत्र अलग-अलग विषेशताओं वाले होते है। इस विभिन्न तंत्रो के साथ पर्यावरण सक्रिय रहता है। पर्यावरण की परिभाषा और विषय क्षेत्र हमारे हित तथा अभिरूचि एवं प्राथमिकताओं द्वारा निर्धारित होते है। हमारा तात्कालिक हित हम जिस स्थान पर रहते है, वायु जिसमे सांस लेते है. आहार जिसे हम खाते है। जल जिसे हम पीते है। संसाधन जिसे हम अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए पर्यावरण से प्राप्त करते है। जो जीव जंतू जिस स्थापनर रहता है। वह उसका पर्यावरण होता है। पर्यावरण किस प्रकार का है, उसकी जानकारी वहाँ पर रहने वाले जीव-जंतुओ एवं पेड पौधों से लगती है। अर्थात जीवों का संबंध पर्यावरण से होता है। अधिकांश जीव-जंतू अपने आपको वातावरण के अनुसार ढलने की क्षमता रखते है। और इस क्रिया को अनुकूलन कहते है। मानव ने अपने जीवन को चलाने के लिए प्रकृति का उपयोग किया है। वातावरण पर्यावरण एवं प्रकृति में वही जीव जीवित रहते है। जो अपने आप को प्रकृति के अनुसार ढलते है। लेकिन जो जीव प्रकृति को अपने अनुसार ढालने का प्रयास करते है। वे प्रकृति के साथ खिलवाड करते है। और अपने को संकट में डालते है। इनमे मानव जाती प्रमूख है। इतिहास साक्षी है जो जीव वातावरण के अनुसार नहीं ढल पाते वे नष्ट हो जाते है। इसका प्रमूख उदाहरण डायनासोर है जो 230 मिलियन वर्ष पूर्व इस पृथ्वीपर थे लेकिन आज वह विलुप्त हुए है। मानव इस पृथ्वी पर विकसित बुध्दिमान प्राणी है। भाषा का उपयोग करके सभ्यता एवं संस्कृति के विकसित करने वाला प्रमुख प्राणी है। मानव न समाज को विकसित किया। एवं समाज में रहकर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रकृति की वस्तुओं का उपयोग किया। जैसे मनुष्य की आवश्यकतायें बढ़ती गयी। प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग बढ़ता गया। प्रारम्भिक स्थिति में यह केवल भोजन एवं रहन-सहन तक सीमित था लेकिन समय की रफ्तार ने मनुष्य को असीमित संसाधनों का उपयोग करना सिखा दिया। फिर चाहे वह आवागमन, आवास, कृषि, उद्योगीकरण, चिकित्सा इसके लिए प्राकृतिक संसाधनों का अधाधुंध प्रयोग करता गया। आज के समय में मानव जाति पर्यावरण के लिए चिंता जनक हो गया ।

प्रकृति अपने आप को संतुलित करती है और मानव के द्वारा प्रकृति के दुरूपयोग का उत्तर जब ज्वालामुखी, भूकंप बाढ, एवं आग जैसे प्राकृतिक घटना ओं से पता है, तो वक्त जैसे ठहर सा गया हो मानव जाति अपने आप को ठगा सा महसूस करता है। किसी भी क्षेत्र की बात करे चाहे वह पर्यावरण प्रदूषण हो, जलसंकट हो या ग्लोबल वार्मिंग हो जहाँ मानव को अपना अस्तित्व खतरे में नजर आता है। वह अपनी कल्याण की बात करता है। न पर्यावरण कल्याण की मानव स्वार्थ, पर्यावरण विनास को पैदा कर रहा है। और पर्यावरण के लिए मानव चिंता का विषय बना हुआ है।

निष्कर्ष:-

पर्यावरणीय संकट संपूर्ण मानवता के लिए प्रश्नचिन्ह बनता जा रहा है। यदी यही ढंग रहा तो पृथ्वी जीवनहिन हो सकती है। पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए वैकल्पिक व्यवस्था के उपाय किय जाए। हर व्यक्ति अगर जागरूक हो जाए और संकल्प करले कि कम-से-कम ऊर्जा का खपत करेना। वनों की कटाई को रोखना चाहिए। वन संरक्षण और चिपको जैसे आंदोलन चलाकर नए पौधों को लगाए जाए और उनका संरक्षण करे। हमे ऊर्जा की बचत की आदत डालनी होगी। बहुमंजीली इमारतों को बनाते समय पेड-पौधों और वर्षा जल-संरक्षण पर बल देना चाहिए । पर्यावरण को सुंदर और संतूलित बनाने में मनुष्य का योगदान महत्वपूर्ण है।

"मनुष्य प्रकृति से है, प्रकृति मनुष्य से नहीं"

संदर्भ :-

1) डॉ. गायत्री प्रसाद (2012) पर्यावरण भूगोल शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.
2) डॉ.बी.सी जाट (2012) भूगोल यु.जी.सी नेट/सेट गितांजली प्रकाशन, जयपूर.
3) डॉ. सिसोदिया (2001) भूगोल यु.जी.सी नेट/सेट उपकार प्रकाशन, आगरा,
4) पर्यावरण और परिस्थितिकी डॉ. बी.पी.राव
5) आर गुप्ता (2012) यु.जी.सी नेट/ सेट भूगोल पॉप्युलर मास्टर गाइड रमेश पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली.
6) पर्यावरण भूगोल अलिझाड, वराट, थोपटे, निराली प्रकाशन, पुणे.
7) पर्यावरण भूगोल- फुले, शहापूरकर, अभिजित प्रकाशन, लातूर